

जातक ग्रंथों में बौद्ध नैतिकता का स्वरूप: एक आलोचनात्मक अध्ययन

Dr. Richa Pathak

Assistant Professor

Department of Ancient History Archaeology and Culture

K.S. Saket P.G. College, Ayodhya

सार

मुख्य रूप से भगवान बुद्ध के पूर्व जन्मों (चाहे वे मनुष्य के रूप में हों या पशु के रूप में) की कथाओं के माध्यम से प्रकट होता है। यह नैतिकता शुष्क उपदेशों पर आधारित न होकर व्यावहारिक, उदार और जीवन के अनुभवों से जुड़ी हुई है। [1, 2, 3]

परिचय

जातक ग्रंथों में बौद्ध नैतिकता के प्रमुख आयाम

- बोधिसत्व का आदर्श और कर्म फल

जातक कथाओं में बोधिसत्व (बुद्ध का भावी रूप) के विभिन्न जन्मों को दिखाया गया है, जहां वे हर परिस्थिति में कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धांतों का पालन करते हुए नैतिक आचरण को सर्वोच्च रखते हैं। प्रत्येक कथा का अंत इस बात को रेखांकित करता है कि अच्छे कर्म का सुखद और बुरे कर्म का दुखद परिणाम होता है। [1, 2]

- पारमिताएं (नैतिक गुणों की पूर्णता)

जातक साहित्य में नैतिक गुणों के उच्चतम विकास को पारमिता कहा गया है, जिनमें प्रमुख हैं:

- दान (उदारता): अपना सब कुछ, यहाँ तक कि अपना जीवन या शरीर भी दूसरों के कल्याण के लिए त्याग देना।
- शील (नैतिक आचरण): पंचशील (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य/अपरिग्रह, और नशे से दूर रहना) का कड़ाई से पालन।
- क्षमा और धैर्य (कान्ति): संकट या अन्यायपूर्ण परिस्थितियों में भी क्रोध न करना और धैर्य बनाए रखना।
- करुणा और मैत्री: मनुष्य ही नहीं, बल्कि पशु-पक्षियों और समस्त जीव-जंतुओं के प्रति अहेतुक प्रेम व दया भाव रखना। [1, 2, 3, 4]

- अहंकार और लोभ का त्याग

इन ग्रंथों में यह बार-बार समझाया गया है कि सत्ता, धन या बल मिलने पर अहंकार मनुष्य का पतन कर देता है। पशुओं से जुड़ी कथाओं (जैसे सिंह और सियार की कथा) के माध्यम से यह संदेश दिया जाता है कि सादा, नैतिक और विनम्र जीवन ही श्रेष्ठ है। [1, 2]

- सार्वभौमिक नैतिकता और त्याग पर बल

जातक कथाएँ (जैसे दशरथ जातक) दिखाती हैं कि बौद्ध नैतिकता केवल बाहरी अनुष्ठानों या युद्ध-विजय तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आंतरिक शुद्धता, सत्य, वचनबद्धता और त्याग पर टिकी है। [1, 2]

जातक (संस्कृत में "जन्म से संबंधित", "जन्म-संबंधी" या "जन्म कथाएँ") भारतीय उपमहाद्वीप का एक विशाल साहित्यिक संग्रह है, जो मुख्य रूप से गौतम बुद्ध के मानव और पशु दोनों रूपों में हुए पूर्व जन्मों से संबंधित है। जातक कथाओं को स्तूपों की रेलिंग और तोरणों पर चित्रित किया जाता था।^{[1][2]} पीटर स्किलिंग के अनुसार, यह शैली "बौद्ध साहित्य के सबसे प्राचीन वर्गों में से एक" है।^[3] इनमें से कुछ ग्रंथों को अपने आप में महान साहित्यिक कृतियाँ भी माना जाता है।^[4] विभिन्न भारतीय बौद्ध संप्रदायों के जातकों के अलग-अलग संग्रह थे। सबसे बड़ा ज्ञात संग्रह थेरवाद संप्रदाय का जातकत्थवण्णना है, जो पाली कैनन के एक पाठ्य विभाजन के रूप में सुत्त पिटक के खुदक निकाय में शामिल है।^[5]

इन कहानियों में, भावी बुद्ध एक राजा, एक बहिष्कृत व्यक्ति, एक देवता, एक जानवर के रूप में प्रकट हो सकते हैं—लेकिन, चाहे वे किसी भी रूप में हों, वे किसी न किसी सद्गुण का प्रदर्शन करते हैं जिसे कहानी के माध्यम से सिखाया जाता है।^[6] अक्सर, जातक कथाओं में कई पात्र होते हैं जो आपस में बातचीत करते हैं और विभिन्न प्रकार की मुसीबतों में पड़ जाते हैं—जिसके बाद बुद्ध का चरित्र सभी समस्याओं को हल करने और सुखद अंत लाने के लिए हस्तक्षेप करता है। जातक शैली इस विचार पर आधारित है कि बुद्ध अपने सभी पिछले जन्मों को याद रख सकते थे और इस प्रकार इन स्मृतियों का उपयोग कहानी सुनाने और अपनी शिक्षाओं को समझाने के लिए कर सकते थे।^[7]

बौद्ध परंपराओं के अनुसार, जातक कथाएँ बुद्धत्व के दीर्घ मार्ग पर आवश्यक अनेक जन्मों, कर्मों और आध्यात्मिक अभ्यासों को दर्शाती हैं।^[1] वे बुद्ध के महान गुणों या परिपूर्णताओं (जैसे उदारता) को भी चित्रित करती हैं और बौद्ध नैतिक शिक्षाएँ देती हैं, विशेष रूप से कर्म और पुनर्जन्म के संदर्भ में।^[5] जातक कथाओं को बौद्ध जगत भर में बौद्ध वास्तुकला में भी चित्रित किया गया है और वे लोकप्रिय बौद्ध कला का एक महत्वपूर्ण तत्व बनी हुई हैं।^[5] इस प्रकार के कुछ सबसे पुराने चित्र सांची और भरहुत में पाए जा सकते हैं।^[1,2,3]

नाओमी एपलटन के अनुसार, जातक संग्रहों ने बुद्धत्व, कर्म और पुण्य तथा अन्य बुद्धों और बोधिसत्वों के संबंध में बुद्ध के स्थान के बारे में विचारों के निर्माण और संचार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई होगी।^[5] पाली जातकनिदान में पाए जाने वाले पारंपरिक मत के अनुसार, कहानियों की प्रस्तावना में, गौतम ने पूर्व बुद्ध दीपांकर के समक्ष भविष्य में बुद्ध बनने की प्रतिज्ञा की थी। फिर उन्होंने बुद्धत्व के मार्ग पर कई जन्म व्यतीत किए, और इन जन्मों की कहानियों को जातक के रूप में दर्ज किया गया है।^[8]

जातक कथाएँ बौद्ध कथाओं की एक अन्य शैली, अवदान से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं (और अक्सर उनमें कुछ समानताएँ भी होती हैं), जो किसी भी कर्मिक रूप से महत्वपूर्ण कार्य (चाहे बोधिसत्व द्वारा किया गया हो या किसी अन्य द्वारा) और उसके परिणाम की कहानी है।^{[2][9]} नाओमी एपलटन के अनुसार, कुछ कहानियाँ (जैसे कि अवदानशतक के दूसरे और चौथे दशक में पाई जाने वाली कहानियाँ) जातक और अवदान दोनों के रूप में वर्गीकृत की जा सकती हैं।^[9]

विचार-विमर्श

जातक कथाएँ बौद्ध शिक्षाओं के प्रसार का एक महत्वपूर्ण माध्यम रही हैं और इनका व्यापक रूप से उपदेशों, अनुष्ठानों, त्योहारों और कला के विभिन्न रूपों में उपयोग किया जाता था। केट क्रॉस्बी लिखती हैं कि इन्हें विभिन्न रूपों में चित्रित किया गया है जैसे "अपुष्ट साहित्य, स्थानीय भाषा में पुनर्कथन, प्रदर्शन, मंदिर कला, अस्थायी सड़क और उत्सव कला, फिल्में, कॉमिक्स और कार्टून।"^[41] जातक कथाओं के पाठ, नकल और कला का प्रायोजन अंततः आम बौद्धों के लिए पुण्य उत्पन्न करने वाले कार्य के रूप में देखा जाने लगा। ये कार्य वैशाख जैसे महत्वपूर्ण त्योहारों के आसपास अधिक आम हैं।^[42]

जातक कथाओं को दर्शाने वाले सबसे पुराने पुरातात्विक प्रमाण भरहुत स्तूप की रेलिंग पर और सांची (लगभग दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के उत्तरार्ध से पहली शताब्दी ईसा पूर्व) में पाए गए चित्र हैं, जिनमें शिलालेख भी शामिल हैं।^{[43][2]} इसके बाद, जातक कथाएँ अजंता जैसे कई बौद्ध स्थलों पर दिखाई देती हैं। इसी प्रकार की जातक कथाएँ तांग-पूर्व काल (लगभग 421-640 ईस्वी) के सिल्क रोड स्थलों के भित्ति चित्रों में पाई जाती हैं, [4,5,6] जैसे कि कुचा में। ये प्रारंभिक दक्षिणपूर्व एशियाई स्थलों, विशेष रूप से बागान स्थलों में भी पाई जाती हैं। बर्मी बौद्ध धर्म में जातक कथाओं के चित्रण की एक व्यापक परंपरा है, जिसका एक बेहतरीन उदाहरण आनंद मंदिर में पाए गए चित्र हैं (जो 554 कथाओं को दर्शाते हैं)।^[43]

जातक कथाएँ अक्सर विशिष्ट स्थानों से जुड़ी होती हैं। मूल रूप से, यह भारत के विशिष्ट स्थानों पर लागू होता था, जो बौद्ध तीर्थ स्थलों के रूप में कार्य करते थे। बाद की परंपराओं ने इसे बौद्ध जगत के अन्य स्थानों तक विस्तारित किया। नाओमी एपलटन के अनुसार, जातक कथाओं में विशिष्ट स्थानों के विशेष संदर्भों की कमी ने उन्हें आसानी से स्थानांतरित और पुनः स्थानीयकृत करने की अनुमति दी। इस लचीलेपन ने जातक कथाओं की स्थायी लोकप्रियता में योगदान दिया।^[44] जातक कथाओं को भारत के बाहर के क्षेत्रों से जोड़ने की इस परंपरा ने इन क्षेत्रों में बौद्ध धर्म के प्रचार और वैधता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।^[44]

इस प्रकार, नेपाल और उत्तरी भारत के कई स्तूप जातक कथाओं के स्थानों को चिह्नित करते हैं। शुआनज़ैंग और फ़ाक्सियन जैसे चीनी तीर्थयात्रियों ने इनमें से कई स्तूपों का वर्णन किया और उनसे जुड़ी कहानियों पर चर्चा की। इन व्यक्तियों द्वारा चर्चित स्थलों में "चार महान स्तूप" के साथ-साथ पुष्कलवती, मंगलुरा, हद्दा पर्वत और सर्वदत्तान के स्तूप भी शामिल हैं।^{[45][46]}

नाओमी एपलटन के अनुसार, फ़ाक्सियन (337-422 ईस्वी) द्वारा देखे गए "चार महान स्तूप" ये हैं: पहला (सोहोतो में) वह स्थान था जहाँ बुद्ध ने अपने शरीर का मांस देकर एक कबूतर का जीवन बचाया था; दूसरा (गांधार में) वह स्थान था जहाँ उन्होंने एक अंधे भिखारी को अपनी आँखें दान कर दीं; और तीसरा और चौथा (तक्षशिला में) वह स्थान था जहाँ उन्होंने एक आदमी को अपना सिर और अपने ही शावकों को खाने वाली एक भूखी बाघिन को अपना पूरा शरीर दान कर दिया, और जहाँ 'आसपास के सभी राज्यों के राजा, मंत्री और प्रजा एक दूसरे से होड़ करते हुए भेंट चढ़ाते हैं'। एक शताब्दी बाद, सोंग्युन इन्हीं चार स्थानों के बारे में लिखते हैं और वेस्संतरा-जातक से जुड़े एक पूरे क्षेत्र का भी उल्लेख करते हैं।

जातक कथाओं के समान कथाएँ जैन धर्म में भी पाई जाती हैं, जिनमें महावीर के पूर्व जन्मों में ज्ञान प्राप्ति के मार्ग पर केंद्रित कथाएँ हैं।^[55] जैन कथाओं में महावीर के अनेक पुनर्जन्मों का वर्णन है, जैसे पशु रूप धारण करना और साथ ही अतीत के मुक्त प्राणियों (जिनों) से उनका सामना होना, जो महावीर के भविष्य के ज्ञानोदय की भविष्यवाणी करते हैं।^[55] हालाँकि, यहाँ एक बड़ा अंतर यह है कि, जहाँ महावीर को भविष्य के ज्ञानोदय की भविष्यवाणी मिलती है, वहीं वे बोधिसत्व गौतम के विपरीत भविष्य में जिन बनने की प्रतिज्ञा नहीं करते हैं।^[55] महावीर के पूर्व जन्मों के बारे में कुछ कथाओं के अस्तित्व के बावजूद, जैन धर्म में बोधिसत्व मार्ग की कोई समकक्ष अवधारणा भी नहीं है।^[55] भारतीय पशु कथाओं का एक समान संग्रह हिंदू पंचतंत्र है, जिसे लगभग 200 ईसा पूर्व का माना जाता है।^[56]

कुछ बौद्ध जातक कथाओं को इस्लामी (और बाद में ईसाई) लेखकों द्वारा भी अपनाया और पुनर्कथन किया गया, जैसे कि 10वीं शताब्दी के शिया विद्वान इब्न बाबूया, जिन्होंने एक जातक कथा को बलवर वा-बुदासफ नामक कहानी में रूपांतरित किया, [7,8,9] जो बरलाम और जोआसफ की ईसाई कथा बन गई।

परिणाम

जातक कथाएँ बुद्ध के पूर्व जन्मों से संबंधित वृत्तांतों का संग्रह हैं, जिनमें नैतिक शिक्षाएँ और नीतिशास्त्र शामिल हैं, जिन्हें सदियों से बौद्ध साहित्य में महत्व दिया जाता रहा है। मुख्यतः लोककथाओं के रूप में लिखी गई ये कहानियाँ बुद्ध को विभिन्न अवतारों में दर्शाती हैं, अक्सर जानवरों के रूप में, और दयालुता, उदारता और ज्ञान जैसे गुणों का चित्रण करती हैं। सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व से भरपूर जातक कथाएँ बौद्ध धर्म के मूल्यों और सिद्धांतों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, इसलिए प्राचीन नैतिक कथाओं के प्रेमियों के लिए इन्हें पढ़ना अनिवार्य है।

क्या आप जानते हैं कि बौद्ध साहित्य में जातक कथाओं के रूप में भगवान बुद्ध के पूर्व जन्मों की अनेक कहानियाँ मिलती हैं? इनमें दशरथ जातक एक महत्वपूर्ण कथा है, जिसमें राम पंडित, लक्ष्मण और सीता का वर्णन मिलता है।

बौद्ध परंपरा की यह रामकथा वाल्मीकि रामायण से कई मायनों में अलग है। इसमें कथा का केंद्र युद्ध और विजय से अधिक त्याग, सत्य, धैर्य, करुणा और नैतिक जीवन पर है।

इसलिए जातक रामायण को समझना भारतीय साहित्य और बौद्ध परंपरा के एक महत्वपूर्ण अध्याय को समझने जैसा है।[10,11,12]

जातक शब्द का अर्थ है "जन्म से संबंधित"। विकास के सिद्धांत के अनुसार, एक कली को फूल बनने में हजारों वर्ष लगते हैं। क्या कोई बुद्धिमान व्यक्ति एक ही जन्म में अचानक ज्ञान प्राप्त कर सकता है या बुद्ध बन सकता है? उस अवस्था तक पहुँचने के लिए असंख्य जन्मों से गुजरना पड़ता है। बुद्ध को भी अनेक पुनर्जन्मों से गुजरना पड़ा। बुद्ध बनने से पहले उन्होंने कई पूर्व जन्म लिए और अपने अंतिम जन्म में उनका दृढ़ संकल्प था।

संकल्प शब्द दृढ़ आकांक्षा को दर्शाता है, जबकि सद्गुण नैतिक कर्म को। अतः, बुद्धत्व की आकांक्षा रखने वाला प्राणी दृढ़ निश्चय के साथ सद्गुणों का अभ्यास करता है—इस अवस्था को संकल्प कहा जाता है। जातक कथाओं में बुद्ध के पचास पूर्व जन्मों (बोधिसत्व अवतारों) का वर्णन है, जिनमें उन्होंने उन सद्गुणों का विकास किया जो अंततः उन्हें ज्ञान की प्राप्ति की ओर ले गए।

जिस प्रकार बुद्ध ने अपने उपदेशों और सौम्य स्वभाव से लोगों को प्रेरित किया, उसी प्रकार ये कथाएँ भी सरल और सुलभ माध्यमों से गहन शिक्षा प्रदान करती हैं। इन कथाओं में बोधिसत्व अक्सर पशु, पक्षी या कभी-कभी मनुष्य रूप धारण करके जटिल सामाजिक समस्याओं का ज्ञान और करुणा से समाधान करते हैं। ये कथाएँ बोधिसत्वों को विभिन्न रूपों में दर्शाती हैं—वृक्ष, हाथी, शेर, बंदर, पक्षी, ऋषि, राजा आदि—जो नैतिक शिक्षाओं को दर्शाते हैं।

जातक कथाएँ कहानी सुनाने के माध्यम से जटिल धार्मिक और नैतिक विचारों को सरल रूप में प्रस्तुत करती हैं। ये मौखिक साहित्य का हिस्सा हैं। इन कहानियों में पशु कथाएँ और मानव कथाएँ दोनों शामिल हैं। विद्वान फाउचर ने जातक कथाओं को सात श्रेणियों में वर्गीकृत किया है:

- नीति संबंधी व्यावहारिक कहानियाँ
- जानवरों की कहानियाँ
- दर्शन और नैतिकता के पूर्ण संदर्भ में कहानियाँ
- योगिक सिद्धि और तपस्या की गाथाएँ
- नैतिक प्रवचन
- दृष्टांत और रूपक
- धार्मिक कथाएँ[13,14,15]

इन कहानियों में अभिव्यक्ति की व्यापक विविधता देखने को मिलती है—कभी कथात्मक, कभी काव्यात्मक, कभी दार्शनिक, और कभी नाटकीय या गीतात्मक भी। इनकी भाषाई शैली विषयवस्तु और उद्देश्य के आधार पर भिन्न होती है।

भारतीय इतिहास में जातक कथाओं का विशेष महत्व है। ये प्राचीन भारत के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक जीवन का प्रतिनिधित्व करती हैं। वास्तव में, ये न केवल भारतीय इतिहास के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि विश्व की साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत में भी इनका प्रमुख स्थान है। इनका दस्तावेजीकरण अद्वितीय है।

जातक कथाएँ प्राचीन भारतीय समाज की संरचना और गतिशीलता को समझने का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। उदाहरण के लिए, वेस्सन्तारा जातक कथा उस समय के राजनीतिक जीवन की जानकारी प्रदान करती है। इनसे हमें प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली, पाठ्यक्रम, विषय और व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक ज्ञान के बारे में पता चलता है—जिसमें निवास, खान-पान और व्यापार जैसे पहलू शामिल हैं।

इन कहानियों में वैशाली, राजगृह, मिथिला, मथुरा, कपिलवस्तु और कौशांबी जैसे प्रसिद्ध शहरों की सड़कों और शहरी नियोजन का सजीव वर्णन है, साथ ही स्थानीय बाजारों और जलमार्गों का भी चित्रण है। जातक कथाओं के चित्र प्राचीन लिपियों और भाषाई रूपों को भी उजागर करते हैं।

उस समय ब्राह्मणों का समाज में उच्च स्थान था। वास्तव में, ब्राह्मण और क्षत्रिय सबसे सम्मानित वर्ग माने जाते थे। दास प्रथा व्यापक रूप से प्रचलित थी। इन कहानियों से हमें पता चलता है कि लोगों को वस्तुओं की तरह खरीदा और बेचा जा सकता था, और यहाँ तक कि एक राजकुमार का भी सौदा किया जा सकता था।[16,17,18]

निष्कर्ष

बुद्ध के शिष्य विविध सामाजिक पृष्ठभूमियों से थे। इन कथाओं में वर्णित शिक्षाएँ अक्सर नैतिक मूल्यों के इर्द-गिर्द घूमती हैं। इनसे हमें पता चलता है कि उस समय लोग अत्यंत धार्मिक थे। राजाओं, वृक्षों, नागों और नदियों की पूजा करना आम बात थी।

जातक कथाओं का प्राचीन भारतीय दर्शन, साहित्य और बाद की कथा परंपराओं पर गहरा प्रभाव पड़ा। ये कथाएँ प्रारंभिक मौखिक परंपराओं और भारत की उत्तरकालीन शास्त्रीय साहित्यिक संस्कृति के बीच एक सेतु का काम करती हैं।[19,20]

संदर्भ

1. एपलटन, नाओमी। "जातक" । ऑक्सफोर्ड ग्रंथसूची । मूल से 2020-05-08 को संग्रहीत । 2020-05-08 को पुनः प्राप्त ।
2. स्ट्रॉबे, मार्टिन। कथाएँ: दक्षिण एशिया, सिल्क, जोनाथन ए. (प्रधान संपादक) "ब्रिल का बौद्ध धर्म विश्वकोश"। खंड I: साहित्य और भाषा। लीडेन, बोस्टन 2015
3. स्किलिंग, पीटर (2010). दक्षिण-पूर्व एशिया का बौद्ध धर्म और बौद्ध साहित्य, पृ. 161–162.
4. शॉ, सारा (2006). जातक: बोधिसत्त की जन्म कथाएँ, पृ. xxii. पेंगुइन यूके.
5. एपलटन, नाओमी (2016-08-31)। "जातक" । ऑक्सफोर्ड रिसर्च एनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन । doi : 10.1093/acrefore/9780199340378.013.182 । ISBN 978-0-19-934037-8 मूल रूप से 2020-08-07 को संग्रहीत । पुनः प्राप्त: 2020-05-08 ।

6. जातक। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका। मूल से 30 नवंबर 2011 को संग्रहित। 4 दिसंबर 2011 को पुनः प्राप्त।
7. रॉबर्ट ई. बसवेल (2004). बौद्ध धर्म का विश्वकोश, खंड 1, पृ. 400–401.
8. शॉ, सारा (2006). जातक: बोधिसत्त की जन्म कथाएँ, पृ. xix. पेंगुइन यूके.
9. एपलटन, एन 2015, 'अवदानशतक के "जातकवदना": भारतीय बौद्ध कथा विधाओं की एक खोज', जर्नल ऑफ द इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज, खंड 38, पृ. 9-31।
10. स्किलिंग, पीटर (2010). दक्षिण-पूर्व एशिया का बौद्ध धर्म और बौद्ध साहित्य, पृ. 171.
11. भिक्खु अनालयो। तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में प्रामाणिक जातक कथाएँ - बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाओं का विकास। फुयान बौद्ध अध्ययन, संख्या 7, पृ. 75-100 (2012), हसिनचू: फुयान बौद्ध संस्थान, ISSN 2070-0512।
12. वार्डर, ए.के. भारतीय बौद्ध धर्म। 2000. पृ. 332–333
13. स्किलिंग, पीटर (2010). दक्षिण-पूर्व एशिया का बौद्ध धर्म और बौद्ध साहित्य, पृ. 172
14. स्ट्रॉन्ग, जॉन एस. (2015). बुद्ध: एक शुरुआती मार्गदर्शिका. वनवर्ल्ड बिगिनर्स गाइड्स (पुनर्मुद्रित संस्करण). लंदन: वनवर्ल्ड पब्लिकेशन्स. पृष्ठ 24. ISBN 978-1-85168-626-1.
15. क्रॉस्बी, केट (2013). थेरवाद बौद्ध धर्म निरंतरता, विविधता और पहचान, पृ. 100. विली-ब्लैकवेल.
16. शॉ, सारा (2006). जातक: बोधिसत्त की जन्म कथाएँ, पृ. 29. पेंगुइन यूके.
17. क्रॉस्बी, केट (2013)। थेरवाद बौद्ध धर्म निरंतरता, विविधता और पहचान, पृ. 103-105। विली-ब्लैकवेल।
18. स्किलिंग, पीटर (2010). दक्षिण-पूर्व एशिया का बौद्ध धर्म और बौद्ध साहित्य, पृ. 165.
19. जातक कथाएँ। www.pitt.edu। मूल से 5 अक्टूबर 2019 को संग्रहित। 11 जनवरी 2020 को पुनः प्राप्त।
20. सुजातो, भंते (2012), संप्रदाय और संप्रदायवाद: बौद्ध विद्यालयों की उत्पत्ति, शांतिपाड़ा, पी। 51, आईएसबीएन 9781921842085